साइकिल कविताएँ

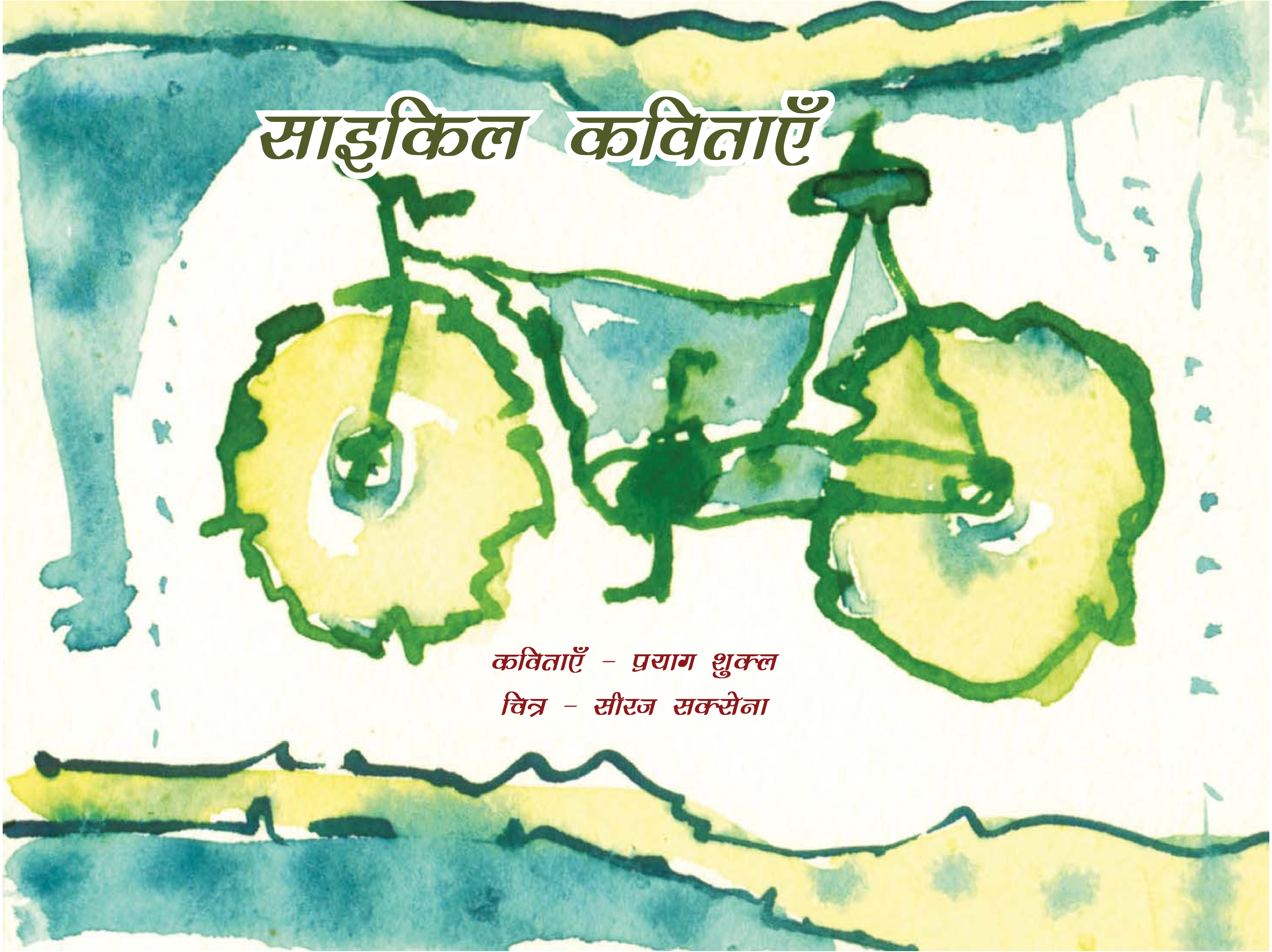

कविताएँ – प्रयाग शुक्ल
चित्र – सीरज सक्सेना

साइकिल अगर जीवन शैली का अभिन्न अंग बन जाए तो इसके बारे में हम अपने मित्रों से बात करते हैं। साइकिल से कभी हम अपने मित्रों के घर भी चले जाते हैं। वैशाली गाजियाबाद स्थित अपने घर से नोएडा एक्सटेंशन स्थित प्रयाग जी के घर तक भी मैं अपने मित्र व पडोसी संजीव जी के साथ साइकिल से गया हूँ।
एक दोपहर जब प्रयाग जी की सोसाइटी के लॉन में उनके साथ बैठा था तब उनसे कहा कि कितना अच्छा हो कि आप साइकिल पर दस कवितायेँ लिखें और मैं साइकिल के रेखांकन या चित्र बनाऊं और हम एक साइकिल कविता पुस्तक की रचना करें।
इसके पहले ''ऊँट चला भाई ऊँट चला'' कविता पुस्तक हम दोनों मिलकर बना चुके हैं। जिसे मेक्स इंडिया फाउंडेशन, नई दिल्ली व प्रथम बुक्स ने सुरुचिपूर्ण ढंग से प्रकाशित किया है।
प्रयाग जी को यह प्रस्ताव पसंद आया और उन्होंने एक हफ्ते में ही ये कवितायेँ लिख भेजी। उनकी तत्परता देख मैं दंग रह गया। मुझे इन जल रंग चित्रों को बनाने में कुछ वक्त लगा।
वीर सिंह जी का आभारी हूँ जिनका देश के बच्चों के प्रति प्रेम बिरला है। वीर जी ने इस बाल कविता पुस्तक को न सिर्फ सराहा बल्कि इसे मूर्त रूप देने के लिए वित्तीय सहयोग भी दिया हैं।
उम्मीद है यह पुस्तक बच्चों के साथ–साथ बड़ों को भी जीवन में साइकिल अपनाने के लिए प्रेरित करेगी। आखिर साइकिल जीवन को काव्यमयी जो बनाती हैं।

सीरज सक्सेना
०३ अक्टूबर २०२२
गाजियाबाद

साइकिल कविताएँ

कविताएँ - प्रयाग शुक्ल

चित्र - सौरज सक्सेना

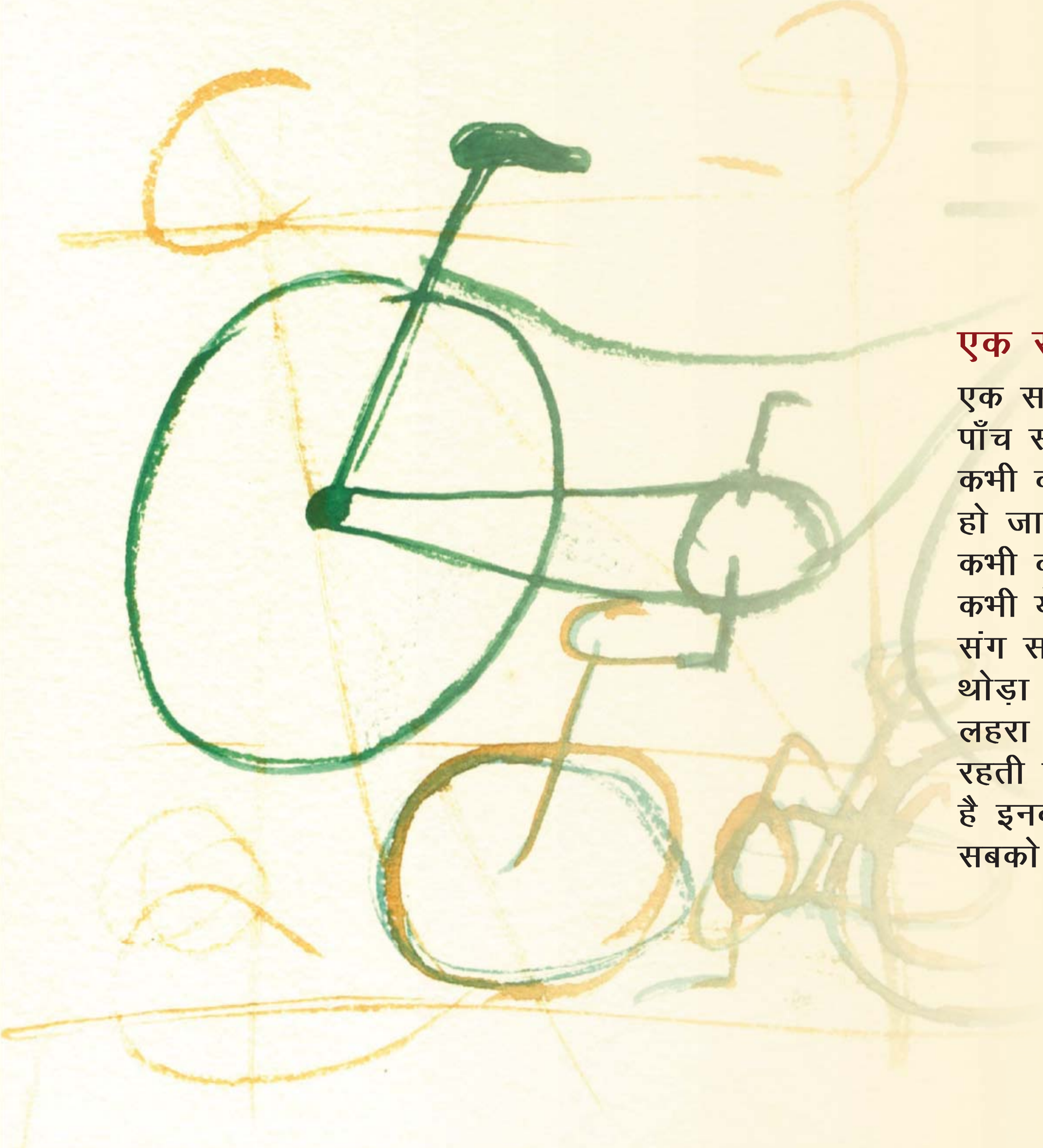

एक साइकिल चार साइकिल

एक साइकिल चार साइकिल
पाँच साइकिल आठ
कभी कभी तो बढ़ते बढ़ते
हो जाती हैं साठ।
कभी कभी दस बीस
कभी ये सौ दो सौ हो जातीं
संग संग चलती हैं सीधे
थोड़ा सा लहराती।
लहरा लहरा चलती है ये
रहती हैं मुस्काती।
है इनकी मुस्कान भली सी
सबको खुश कर जाती।

उड़न छू

धीरे–धीरे चली साइकिल
धीरे–धीरे बढ़ी साइकिल
फिर ऊपर को चढ़ी साइकिल
चढ़ती जाती बढ़ती जाती
उतर वहाँ से गयी साइकिल

रस्ता कच्चा हो या पक्का
बढ़ती जाती बढ़ती जाती
नहीं चाहिए इसको धक्का
धीरे–धीरे चली साइकिल
अरे ! उड़न छू हुई साइकिल।

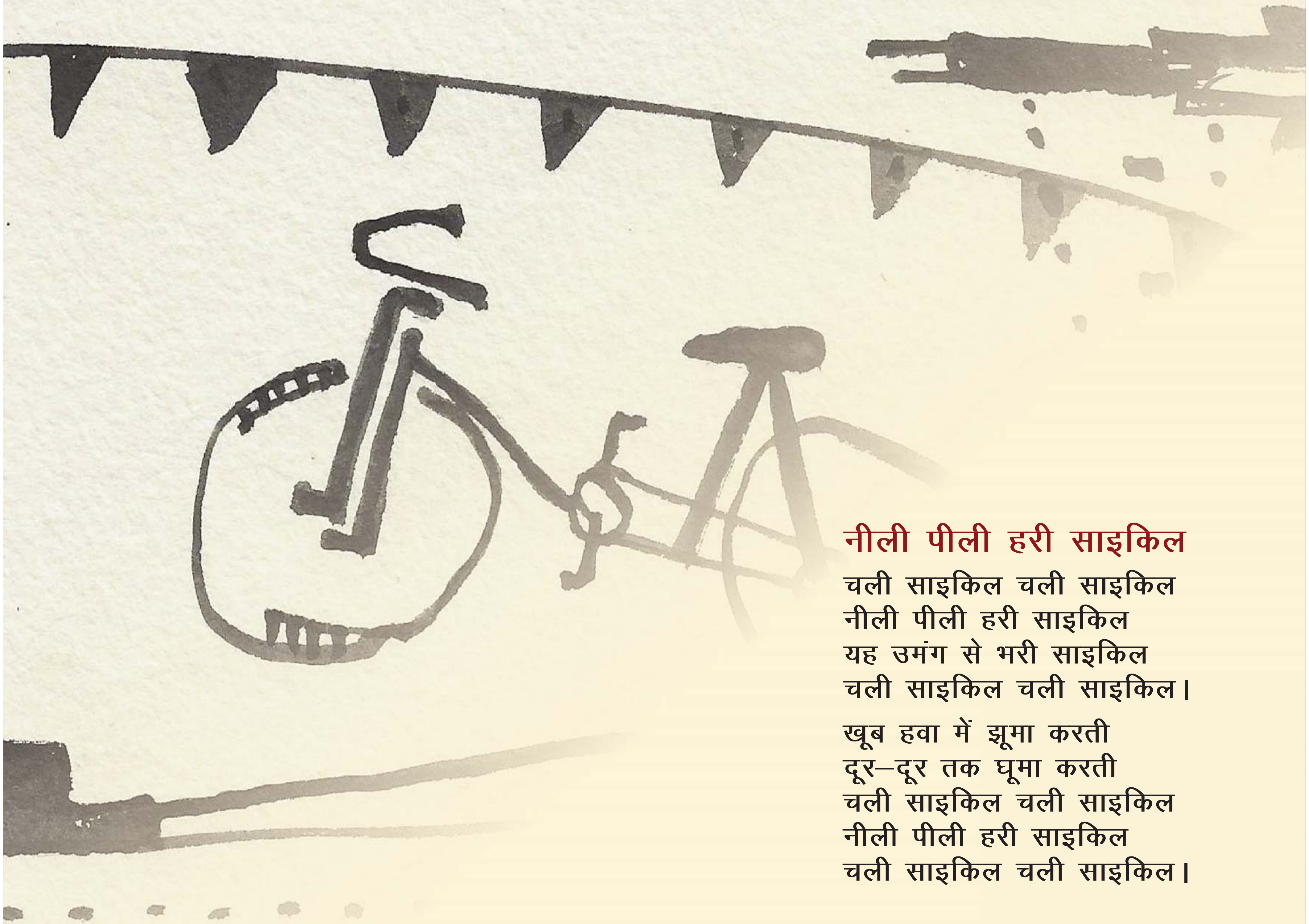

नीली पीली हरी साइकिल

चली साइकिल चली साइकिल
नीली पीली हरी साइकिल
यह उमंग से भरी साइकिल
चली साइकिल चली साइकिल।

खूब हवा में झूमा करती
दूर–दूर तक घूमा करती
चली साइकिल चली साइकिल
नीली पीली हरी साइकिल
चली साइकिल चली साइकिल।

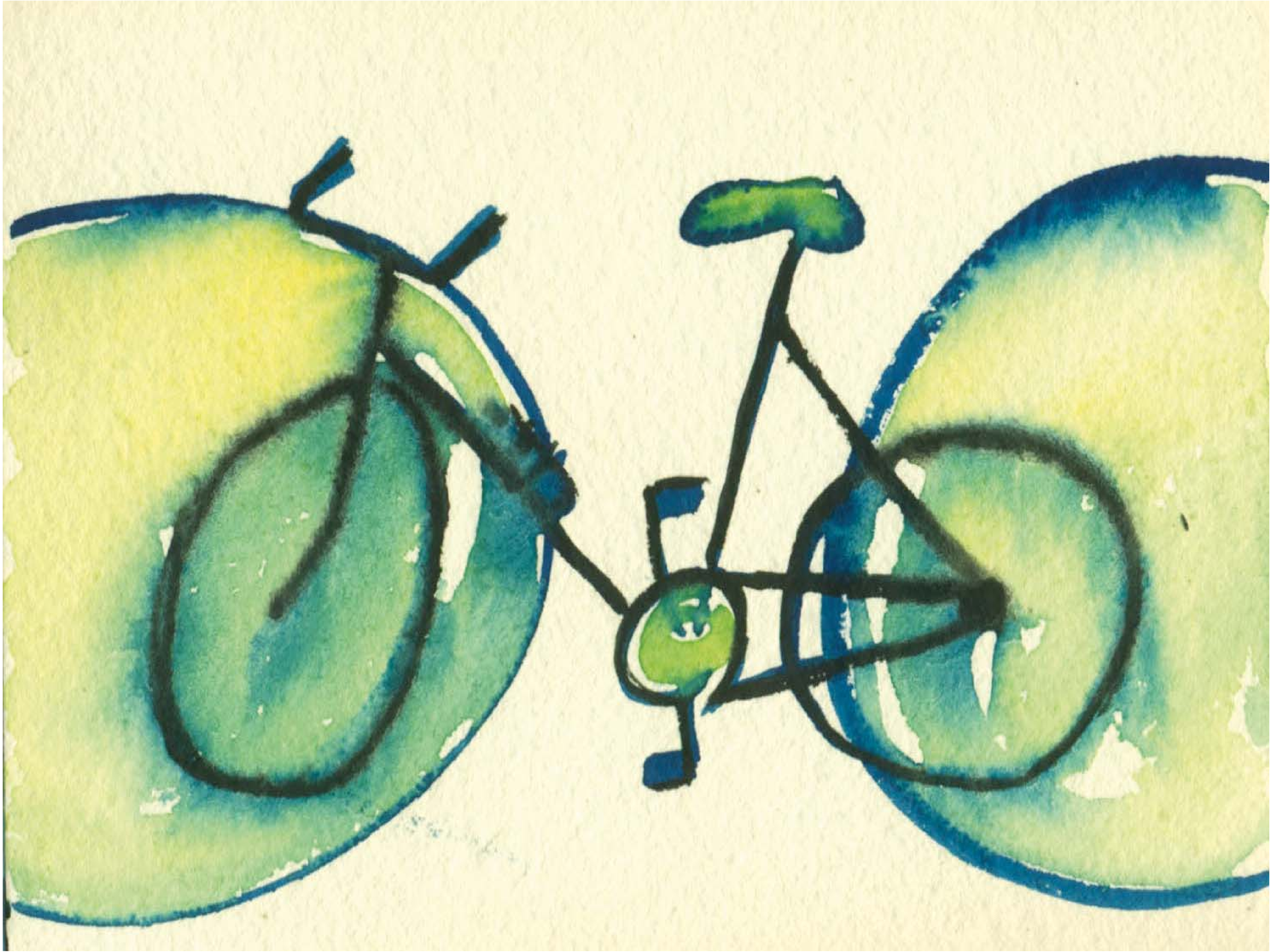

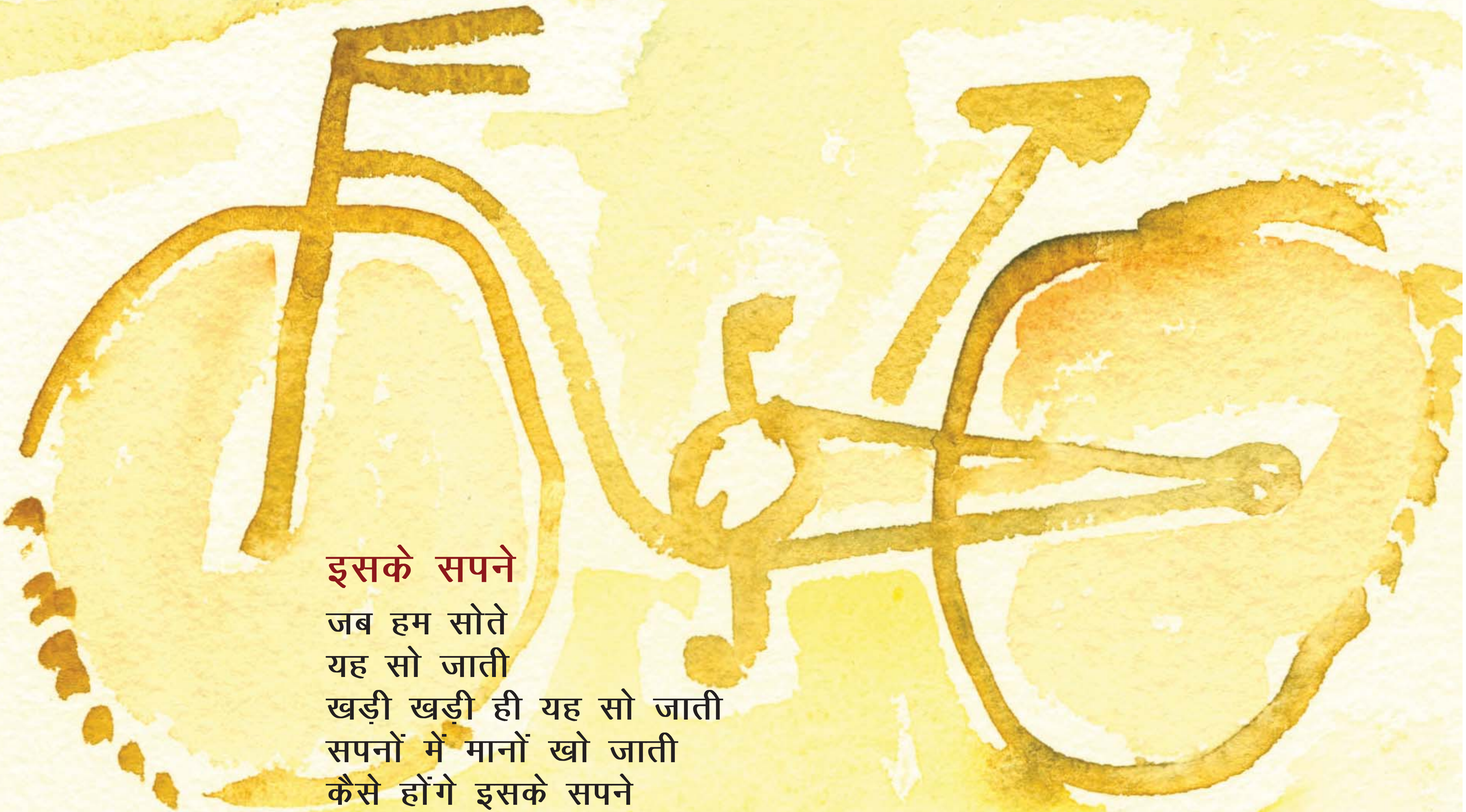

इसके सपने

जब हम सोते
यह सो जाती
खड़ी खड़ी ही यह सो जाती
सपनों में मानों खो जाती
कैसे होंगे इसके सपने
कहीं दूर तक हो आने के
पुलिया पर बैठे गाने के
छाया में फिर किसी पेड़ की
कुछ थोड़ा सा सुस्ताने की।

सुबह सुबह की सैर

साइकिल है ये हमको भाती
लाली जब फैले सूरज की
यह तब हमें जगाती।

हम होते तैयार
साइकिल अपनी यह ले लेते
जैसे जाती नाव नदी में
वैसे इसको खेते।

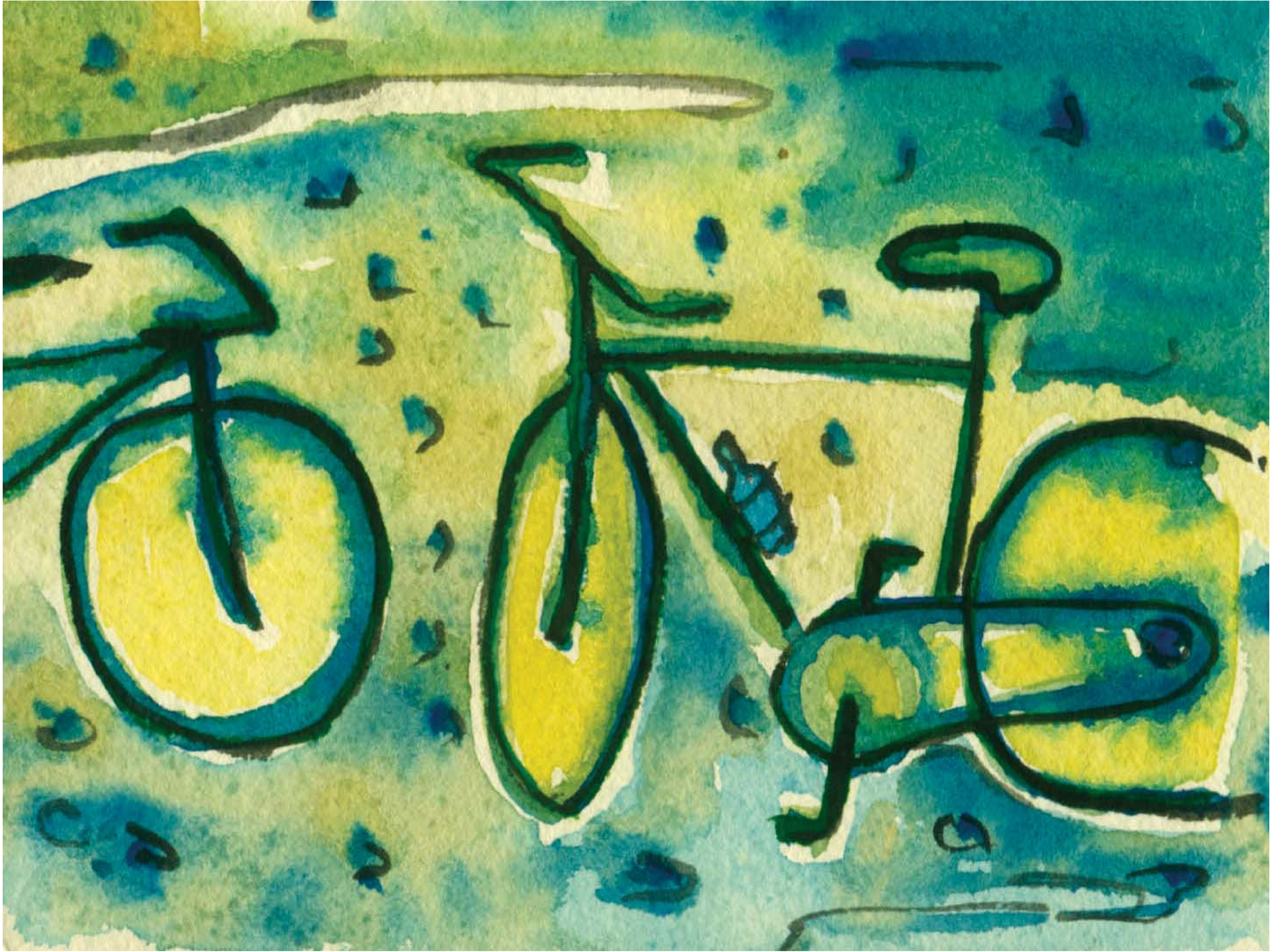

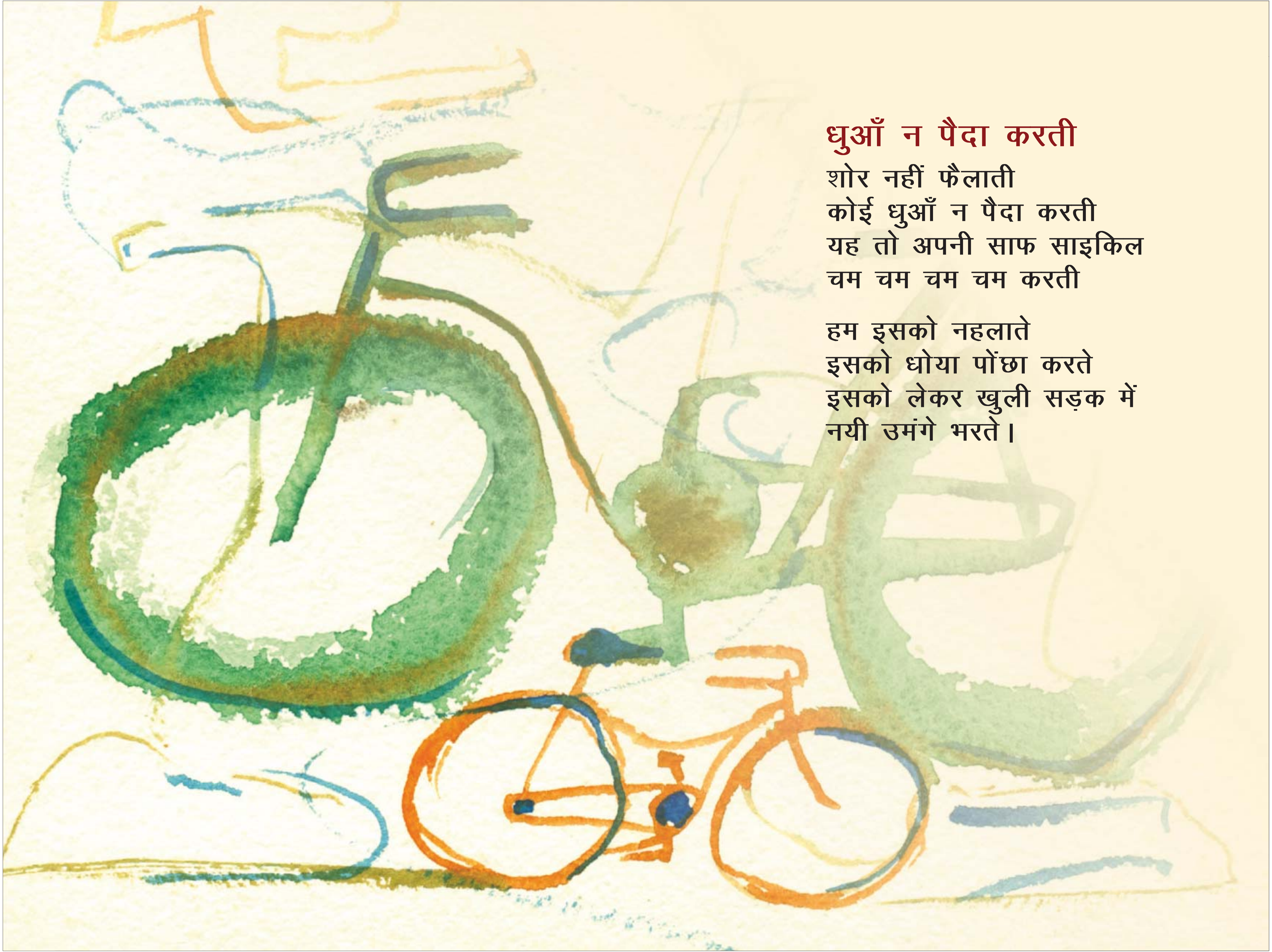

धुआँ न पैदा करती

शोर नहीं फैलाती
कोई धुआँ न पैदा करती
यह तो अपनी साफ साइकिल
चम चम चम चम करती

हम इसको नहलाते
इसको धोया पोंछा करते
इसको लेकर खुली सड़क में
नयी उमंगे भरते।

कहीं आम जामुन दिख जाएँ

कहीं आम जामुन दिख जाएँ
यह मन को बहलाती
रुककर थोड़ी देर वहाँ पर
रहती है इठलाती

कभी मोर से, कभी कबूतर से
रहती बतियाती

बातें इसकी ख़तम न होती
कहती ज़रा रुको तो

वह डाली कितना झुक आयी
तुम भी ज़रा झुको तो

अपना रस्ता आप बनाती
हरदम चलती जाती।

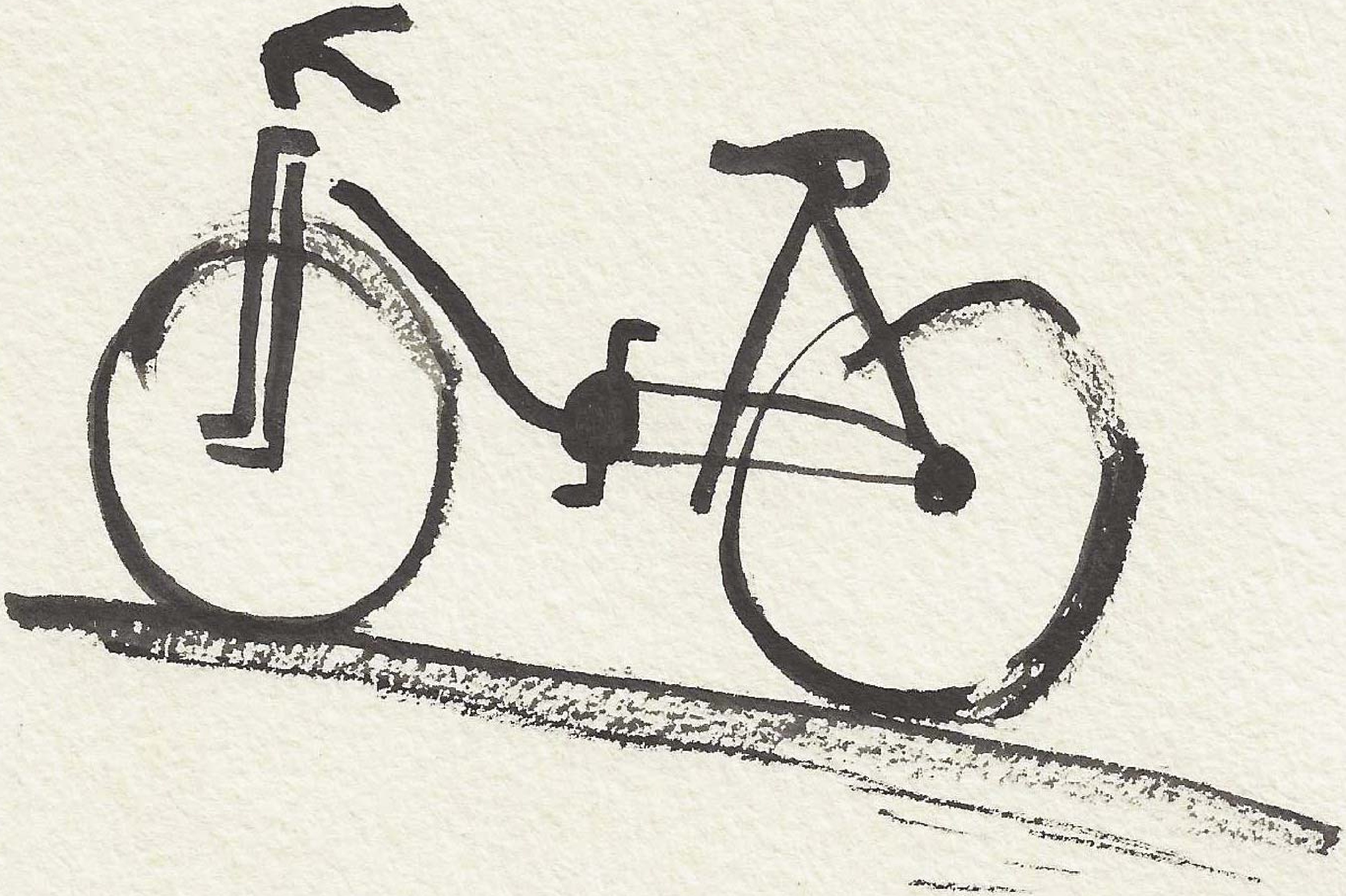

एक पेड़ है एक साइकिल

एक पेड़ है एक साइकिल
उसी पेड़ से टिकी साइकिल
अभी ज़रा सी रुकी साइकिल
सुस्ताती है खड़ी–खड़ी ही
फिर चल पड़ती तेज साइकिल।
टन–टन–टन–टन घंटी बजती
दन–दन–दन–दन है यह जाती
सन–सन–सन–सन है यह जाती
ऐसा लगता गाती जाती

बस आगे को बढ़ती जाती
बड़ी दूर जाकर सुस्ताती
फिर आगे को बढ़ती जाती
बढ़ती जाती।

गर्मी हो या सर्दी

नहीं भीगने से मैं डरती
आती जब बरसात!
तब भी तो मैं करती ही हूँ
तेज हवा से बात

गर्मी हो या सर्दी चाहे
या निकली हो घूप
मुझको तो चलना ही आता
दिन हो चाहे रात

चल पड़ती मैं किसी गली में
कभी खुले मे आती।
कभी सड़क पर पैडिल पैडिल
रहती हूँ मुस्काती

दिन हो चाहे रात।

साथ हवा के चली साइकिल

चली हवा लो
चली साइकिल
तेज तेज बस चली साइकिल
हवा हो गयी
हवा साइकिल
पड़ती हमको नहीं दिखाई
तेज चली वह
कितना भाई
चली हवा लो
चली साइकिल
हवा हो गयी
हवा साइकिल!

अपनी साइकिल स्वयं बनाएं

आओ लिखें अपनी साइकिल कविता

साइकिल

अपनी साइकिल स्वयं बनाएं

आओ लिखें अपनी साइकिल कविता

साइकिल

प्रयाग शुक्ल

प्रयाग शुक्ल : जन्म 28 मई, 1940, कलकत्ता (अब कोलकाता)। कवि, कथाकार, कला समीक्षक और अब चित्र रचना भी करते हैं। लगभग 50 पुस्तकें प्रकाशित हैं। बच्चों के लिए लिखने में विशेष रुचि है। इनकी बच्चों के लिए लिखी चीजें जितना बच्चे पसंद करते हैं, उतना ही बड़े भी। बांग्ला से रबीन्द्रनाथ ठाकुर की 'गीतांजलि' समेत कई पुस्तकों का अनुवाद कर चुके हैं। यात्राओं में विशेष रुचि है। राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय की पत्रिका 'रंग प्रसंग' के सम्पादक रहे हैं।
दिल्ली एनसीआर, नोएडा में रहते हैं।

सीरज सक्सेना

कलाकार, लेखक एवं बायसिकल मेयर गाज़ियाबाद

जन्म– 30 जनवरी १९७४ महू (मध्यप्रदेश)
शिक्षा– शासकीय बाल विनय मंदिर और शासकीय ललित कला संस्थान इंदौर से। चित्र, सिरेमिक, काष्ठ, टेक्सटाईल, धातु, छापा कला आदि कला माध्यमों में गत २६ वर्षों से सक्रीय और देश–विदेश में अब तक २७ एकल और २७० से अधिक समूह कला प्रदर्शनियाँ आयोजित। विश्व के अनेक महत्त्वपूर्ण निजी कला संग्रहों और कला संग्रहालयों में चित्र एवं सिरेमिक संस्थापन संग्रहित। वाना वेलनेस रिट्रीट देहरादून के लिए विभिन्न माध्यमों में कला रचना। राष्ट्रीय गांधी संग्रहालय नई दिल्ली, विदेश मंत्रालय भारत सरकार, ऑल इंडिया रेडियो, प्रेस ट्रस्ट ऑफ इण्डिया दिल्ली, मार्क रोथको कला केंद्र लातविया, यिंग सिरेमिक कला संग्रहालय ताइवान, ओरेन्स्को कला केंद्र पोलेंड, चाँगचुन शिल्प कला केंद्र चीन, ओत्तो निमेयार होस्टाईन कला संग्रहालय जर्मनी, क्राबी कला संग्रहालय थाईलैंड, पानेवेजिस सिविक कला वीथिका लिथुआनिया आदि कला केंद्रों में बतौर अतिथि कलाकार आमंत्रित। "आकाश एक ताल है" लेख संग्रह, कवि–सम्पादक पीयूष दईया के साथ पुस्तकाकार संवाद "सिमिट सिमिट जल", कवि कला आलोचक राकेश श्रीमाल के साथ संवाद "मिटटी की तरह मिटटी", "कला की जगहें" नामक यात्रा वृत्त व "किस्से साईकिल के" पुस्तकें प्रकाशित। विगत २२ वर्षों से दिल्ली में हैं। साइकिल यात्राएं –नर्मदा यात्रा १९९७, भोपाल से दंतेवाडा १९९९, टूर ऑफ नार्थ ईस्ट २०१८।
ईमेल –siirajsaxena@gmail.com